

प्रभू जग में अवतार जब लीजियेगा,
मुझे अपना सेवक बना लीजियेगा ।

तर्ज अजी रूठ कर अब कहाँ ।

सदा करना चाहूँ मैं सेवा तुम्हारी,
हमेशा रहूँ मैं रजा में तुम्हारी,
यही आरजू है प्रभू बस हमारी,
पनाह दीजियेगा शरण लीजियेगा,
प्रभू जग में अवतार जब लीजियेगा,
मुझे अपना सेवक बना लीजियेगा ।

सदा तेरे दर का रहूँ मैं भिखारी,
प्रभू चाकरी मैं करूँ बस तूम्हारी,
शरण चाहता हूँ प्रभू मैं तुम्हारी,
करम कीजियेगा करम कीजियेगा,
प्रभू जग में अवतार जब लीजियेगा,
मुझे अपना सेवक बना लीजियेगा ।

है छोटी सी विनती ये साँसे भी है कम,
प्रभू तेरे दर पर ही निकले मेरा दम,
तो मरने का मुझको न होगा कोई ग़म,
चरण मेरे सिर से लगा दीजियेगा,
प्रभू जग में अवतार जब लीजियेगा,

मुझे अपना सेवक बना लीजियेगा ।

प्रभू जग में अवतार जब लीजियेगा,
मुझे अपना सेवक बना लीजियेगा ।

– भजन लेखक एवं प्रेषक –
श्री शिवनारायण वर्मा,
मोबा.न.8818932923

वीडियो उपलब्ध नहीं ।

Source: <https://www.bharattemples.com/prabhu-jag-me-avtar-jab-lijiyega/>



Bharat Temples

Complete Bhajans Collections - Download Free Android App
<https://play.google.com/store/apps/details?id=com.numetive.bhajans>

Facebook: <https://www.facebook.com/bharattemples/>

Telegram: <https://t.me/bharattemples>

Youtube: <https://www.youtube.com/channel/UC24oJCxZJyhhKzSUD-Lt9Tw>